इतथें अर्ज भेजत हैं, सो पोहोंचत है हक को।
जो असल अकलें विचारिए, तो आवे दिल मों।।५८।।

यहां अर्श दिल से जो प्रार्थना करते हैं वह श्री राजजी को पहुंचती है। यदि आप आत्मा की मूल बुद्धि से विचार करें, तो यह बात दिल में सच्ची लगती है।

तेहेकीक अर्ज पोहोंचत है, जो भेजिए पाक दिल।
ऐसी पोहोंचाई हक ने, दिल पोहोंचे मोहोल-असल।।५९।।

पवित्र दिल से धनी को की गयी विनती उनको अवश्य ही पहुंचती है। धनी ने हमें यहां तक पहुंचा दिया है कि हम असल घर परमधाम तक सोचने लगे हैं।

ए जो पाक दिलें विचारिए, देखो आवत इलहाम ए।
पर उपली नजरों न देखिए, ए जो पोहोंचत हकीकत जे।।६०।।

यदि पवित्र दिल से विचार कर देखें तो धनी के इशारे हम तक पहुंचते हैं। यदि ऊपरी नजर से देखें तो वास्तविक हकीकत दिखाई नहीं देती।

आवत जात जो खबरें, सो परदे से देखत।
बैठी तले कदम के, लेवत एह लज्जत।।६१।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो परमधाम से खबरें (न्यामतें) यहां आती हैं वह हमारी परआतम देख रही है—जो श्री राजजी के चरणों तले बैठकर लज्जत ले रही है।

महामत कहे मैं हक की, पोहोंची बका में।
ए मैं असल अर्स की, ए मैं मोमिनों हक से।।६२।।

श्री महामति जी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथजी! अब मेरे अन्दर श्री राजजी महाराज की 'मैं' हो गई है और मैं हक की होकर परमधाम पहुंच गई। अब यह 'मैं' असल अर्श की है और यह श्री राजजी महाराज की कृपा से हुई।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। १५१ ।।

ज्यों जानो त्यों रखो, धनी तुमारी मैं।
ए केहेने को भी ना कछू, कहा कहूं तुमसे।।१।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे धनी! अब जिस तरह से आप चाहें उसी तरह से आप रखो। मैं आपकी हूं, क्योंकि संसार की 'मैं' (अहं) मुझ में नहीं रही। अब कहने को कुछ रहा ही नहीं जो आपसे कहूं।

कछू कछू दिल में उपजत, सो भी तुमहीं उपजावत।
दिल बाहेर भीतर अंतर, सब तुम हीं हक जानत।।२।।

मेरे दिल में कुछ बातें आती हैं। वह आप ही पैदा कराते हैं। मेरे दिल के अन्दर-बाहर की सब हकीकत आप जानते हैं।

जो लों रखी तुम होस में, तब लग उपजत ए।
ए मैं मांगे तुमारी तुम पे, तुम मंगावत जे।।३।।

जब तक आपने मुझे संसार की 'मैं' देकर संसार में रखा, तब तक चाहना मेरी थी। फिर मैंने आपकी 'मैं' को मांगा। वह आपने मंगवाई (मेरी 'मैं' समाप्त हो गई)।

Nijanand App

मैं मांगत डरत हों, सो भी डरावत हो तुम।
मैं मांगे तुमारी तुम पे, ना तो क्यों डरे अंगना खसम।।४।।

हे धनी! मैं मांगने से डरती हूं। आप ही डरा रहे हो। मैं आपकी हूं। आपसे आपकी 'मैं' मैंने मांगी, तो धनी की अंगना धनी से मांगते डरे क्यों?

हजरत ईसे मांगया, हक अपनायत कर।
तिन पर ए गुनाह लिख्या, ए देख लगत मोहे डर।।५।।

श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने आपको अपना धनी जानकर जागनी मेरे हाथ से कराओ, यही मांगा था। जागनी कराने की मांग का दोष उन पर लगा, यह देखकर मुझे डर लगता है।

फुरमान देख के मैं डरी, देख रूहअल्ला पर गुना।
ए खासी रूह खुदाए की, मोमिनों रह्या न आसंका।।६।।

कुरान में जो खुदा की बड़ी रूह (श्यामाजी) हैं, उन रूहअल्लाह के ऊपर लगा गुनाह देखकर मैं डर गई, इसलिए मोमिनों को अब यह संशय नहीं रहना चाहिए कि मांगने से गुनाह लगता है, अर्थात् मांगना नहीं चाहिए।

तो डर बड़ा मोहे लगत, जो गुनाह कह्या इन पर।
माफक रूहअल्लाह के, कोई मरद नहीं बराबर।।७।।

श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी की बराबरी का कोई मर्द-मोमिन नहीं है। जब श्यामा महारानी को ही गुनाह लग गया, तो यह देखकर मुझे भी बड़ा डर लगता है।

ए खावंद है अर्स अजीम का, हादी हमारा सोए।
इस मानंद चौदे तबक में, हुआ न होसी कोए।।८।।

यह श्यामा महारानी परमधाम के सुभान हैं और हमारे मालिक हैं। चौदह लोकों में इनके बराबर न कोई हुआ है न कोई होगा।

मैं नेक बात याकी कहूं, पाक रूहों सुनो सब मिल।
मैं की खुदी सखत है, ए लीजो देकर दिल।।९।।

हे मोमिनो! मैं श्यामा महारानी की जरा सी हकीकत बताती हूं। तुम सब मिलकर सुनो। मैं-खुदी की बात बड़ी कठोर है। इसको दिल में अच्छी तरह से ग्रहण कर लेना।

रूह-अल्ला करी बन्दगी, तिन में उनकी मैं।
तो गुनाह कह्या इन पर, इन मैं मांग्या हक पे।।१०।।

श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने संसार में चालीस वर्ष तक सघन खोज की। इस बन्दगी के अहं में उन्होंने जागनी मेरे हाथ से कराओ, धनी से मांग की, तो उनको मांगने का गुनाह लगा।

मेरे न कछू बन्दगी, न कछू करी करनी।
ओ मैं मुझमें न रही, ए तो मैं हकें करी अपनी।।११।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैंने न तो कोई बन्दगी की और न कुछ कर्म ही किए। फिर भी माया की 'मैं' (अहं) मेरे अन्दर नहीं रही। श्री राजजी महाराज ने मेरे अन्दर अपनी 'मैं' बिठाकर मुझे अपना बना लिया।

Nijanand App

मैं थी बीच लड़कपने, धनी तुमारी पढ़ाएल।
मेरे उमेद न आसा बंदगी, हक तुमारी निवाजल।। १२ ।।

मैं भोलीभाली नासमझ थी। आपने ही जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से मुझे सिखा दिया। अब मुझे किसी प्रकार की बन्दगी करने की चाहना भी नहीं थी, क्योंकि मैं पूर्ण रूप से आपके ही आश्रित हो गई।

मैं जो मांगी बेखबरी, सो उमेद पूरी सब तुम।
तब उस खुदी की मैं को, दिल चाह्या दिया हुकम।। १३ ।।

मैंने बेसुध अवस्था में आपसे परमधाम देखने की चाहना की थी और उसके लिए शरीर के अवगुण निकालने के लिए शरीर को दुःख दिए। अब आपने मेरे अन्दर बैठकर मेरी सभी चाहना को पूर्ण कर दिया। तब उस मांगने की 'मैं' (अहं) को भी पूरा कर दिया।

अब मांगूं सिर हुकम, हुज्जत लिए खसम।
अब क्यों न होए सो उमेद, दिया हाथ हुकम।। १४ ।।

अब धनी की अंगना का दावा लेकर हुकम को अपने सिर लेती हूं। अब मेरी हर चाहना अवश्य पूर्ण होगी, क्योंकि हुकम अब मेरे हाथ में धनी ने दे दिया है।

खसम खसम तो करत हों, पर खसम न आवत भार।
ना हुज्जत रूह अर्स की, तो होत ना दिल करार।। १५ ।।

मैं खसम-खसम कहती तो हूं पर खसम की साहिबी का भार उठा नहीं सकती। अब परमधाम की अंगना होने का भी दावा हट गया, इसलिए अब मन को चैन नहीं आता, क्योंकि न तो मैं अंगना रह गई और न ही खसम बन पाई।

जो मांगूं हक जान के, अर्स रूह कर हुज्जत।
तो तब हीं उमेद पोहोंचहीं, जो दिल में यों उपजत।। १६ ।।

यदि मैं परमधाम की अंगना का दावा लेकर आपसे मांगती तो मेरी चाहना उसी समय पूरी हो जाती, ऐसा दिल में विश्वास है।

जैसा हक है सिर पर, तैसा तेहेकीक जानत नाहें।
बिसर जात है नींद में, दृढ़ होत न ख्वाब के माहें।। १७ ।।

जैसे सब प्रकार से समर्थ धनी हमारे सिर पर खड़े हैं, वैसी पहचान हमारे दिल में नहीं आती। यह माया के संसार में सब भूल जाता है और सपने में दृढ़ता आती नहीं है।

जो मांग्या है ख्वाब में, सो हकें पूरा सब किया।
सो बोहोत ना मोहे सुध परी, जो ख्वाब के मिने दिया।। १८ ।।

मैंने सपने में जो कुछ मांगा धनी ने सब पूरा कर दिया। जो मुझे धनी ने दिया उसकी मुझे ज्यादा पहचान नहीं हुई।

जो मैं मांगूं जाग के, और जागे ही में पाऊं।
तो कारज सब सिद्ध होवहीं, जो फैलें नींद उड़ाऊं।। १९ ।।

यदि मेरी रूह जाग जाए और जागृत अवस्था में यह सब मिल जाए, तो मेरे सब काम सिद्ध हो जाएं। तो फिर रहनी से ही नींद उड़ जाएगी और मेरे कर्म ही बदल जाएंगे।

Nijanand App

ए जो नींद उड़ाई कौल में, जो कदी फैल में उड़त।
तो निसबत इन की हक सों, आवत अर्स लज्जत।। २० ।।

नींद जिसे मैंने वचनों से उड़ा दिया है, यदि रहनी में आकर उड़ाती तो मेरी रहनी से निसबत हो जाती और घर के सुख मिल जाते।

जो पाइए इत लज्जत, तो होवे सब विध।
कायम सुख इन अर्स के, सब काम होवें सिध।। २१ ।।

यदि इसी संसार में धनी के मिलने की और घर की पहचान हो जाती, तो सब बात बन जाती। अखण्ड घर (परमधाम) के सुख भी मिल जाते और सब चाहना भी पूर्ण हो जाती।

तो न पाइए इत लज्जत, जो फैल न आवत हाल।
हाल आए क्यों सेहे सके, बिछोहा नूर-जमाल।। २२ ।।

हम तब तक अखण्ड सुख प्राप्त नहीं कर सकते, जब तक हम करनी से रहनी में नहीं आ जाते। रहनी में आने पर धनी का वियोग सहन नहीं होता।

ऐसा हक है सिर पर, कर दई हक पेहेचान।
ऐसी हक की मैं जोरावर, क्यों रहे दीदार बिन प्रान।। २३ ।।

ऐसे समर्थ धनी मेरे सिर पर हैं। जब इसकी पहचान धनी ने करा दी, तब पता चला कि धनी की 'मैं' (अहं) कितनी बलशाली है। ऐसी पहचान हो जाने के बाद बिना धनी के मिलन के प्राण कैसे खड़े हैं?

ए जो मैं खुदाए की, क्यों रहे दीदार बिन।
क्यों रहे सुने बिना, मीठे पिउ के वचन।। २४ ।।

अब धनी की जो 'मैं' (अहं) मेरे अन्दर आ गई है वह धनी के दर्शन के बिना तथा धनी के मीठे वचन सुने बिना कैसे रह सकती है?

एक पल जात पिउ दीदार बिना, बड़ा जो अचरज ए।
ए जो मैं है हक की, सो क्यों खड़ी बिछोहा ले।। २५ ।।

धनी के बिना एक पल भी जो बीतता है, यह भी कैसे बीतता है बड़ी हैरानी है। यह जो धनी की 'मैं' (अहं) मेरे अन्दर है वह धनी का बिछोह कैसे सहन कर रही है?

छल में आप देखाइया, दिया अपना इलम।
मैं आप पेहेचान ना कर सकी, न कछू चीन्हा खसम।। २६ ।।

इस माया के संसार में आपने अपना ज्ञान देकर कि आप हमारे साथ हैं, ऐसा दिखाया, परन्तु मैं अपनी परआतम को न पहचान सकी और न धनी को ही पहचान सकी।

धनी मेरा अर्स का, मैं तुमारी अरधंग।
भेख बदल सुनाए वचन, दिया दीदार बदल के अंग।। २७ ।।

हे मेरे धाम के धनी! मैं आपकी अंगना हूं। आपने इस संसार में भेष बदलकर श्री देवचन्द्रजी के रूप में तारतम ज्ञान दिया और हवसा में अपना वह स्वरूप भी बदलकर दर्शन दिया।

Nijanand App

मैं बीच फरामोसी के, तुम आए सूरत बदल।
पेहेचान क्यों कर सकूं, इन वजूद की अकल।। २८ ।।

मैं बेसुधी में थी। आप सतगुरु के रूप में स्वरूप बदलकर श्री देवचन्द्रजी के तन में आए। मेरा तन मेहेराज ठाकुर और अक्ल संसार की होने से मैं आपकी पहचान कैसे करती?

तालब तो भी तुमसे, इस्क नहीं तुम बिन।
सब्द सुख भी तुम से, तुम हीं दिया दरसन।। २९ ।।

मांगना भी आपसे है और इश्क भी आपके बिना कहीं है नहीं। मीठी-मीठी बातों का सुख भी आपसे मिलना है। आपने ही मुझे दर्शन दिया।

ए उपजावत तुमहीं, तुमहीं दिखलावत।
तुमहीं खेल खेलावत, तुमहीं समें बदलत।। ३० ।।

हे धनी! इच्छा भी आप पैदा करते हो और दिखाते भी आप हो। खेल खेलाते भी आप हो। समय बदलने वाले भी आप हो।

मैं को तुम खड़ी करी, मैं को देखाई तुम।
मैं को तले कदम के, खड़ी राखी माहें हुकम।। ३१ ।।

हे धनी! इस संसार में 'मैं' (अहं) का भाव आपने ही दिया। आपने ही वह 'मैं' (अहं) झूठा है यह बताया है। आपकी कृपा से आपके चरणों के तले जागृत होकर बैठी और आपके हुकम ने ही मुझे संसार में खड़ा रखा।

तुमहीं साथ जगाइया, तुम दई सरत देखाए।
तुमहीं तलब करावत, तो दरसन को हरबराए।। ३२ ।।

हे धनी! आपने ही सुन्दरसाथ को जगाया। आप ही ने कयामत के निशानात जाहिर कराए। अब आप ही दर्शन की चाहना पैदा कराते हो जिसके लिए मेरी आत्मा जल्दबाजी करती है।

तुमहीं दिल में यों ल्यावत, मैं देखों हक नजर।
सो पट तुमहीं से खुले, तुमसे टले अन्तर।। ३३ ।।

आप ही मेरे दिल में यह चाहना पैदा करते हो कि मैं आपके साक्षात् दर्शन करूं। हमारे और आपके बीच माया में जो तन का परदा लगा है, वह आपके ही हटाने से हटेगा।

श्रवनों सब्द सुनाए के, दिल दीदे दीदार।
अनेक हक मेहेरबानगी, सो कहां लो कहूं सुमार।। ३४ ।।

आपने अपनी वाणी सुनाकर दिल के नयनों से दर्शन दिए। आपकी इस तरह की बेशुमार मेहरबानियां हैं। उनका वर्णन कहां तक करूं?

जोस इस्क और बंदगी, चलना हक के दिल।
ए बकसीस सब तुम से, खुसबोए वतन असल।। ३५ ।।

आपने अपना जोश, इश्क और बन्दगी दी, जिससे मैं आपके अनुकूल चल सकी। यह कृपा भी आपने की कि घर परमधाम की खुशबू आने लगी, अर्थात् आनन्द मिलने लगा।

Nijanand App

और कई इनाएतें तुम से, सो कहां लो कहूं वचन।
सो कई आवत हैं नजरों, पर कह्यो न जाए सुकन।। ३६ ।।

आपने और भी कई एहसान किए। उनका कहां तक बखान करूं? यह सब याद तो आते हैं, पर मुंह से कहे नहीं जाते।

मैं अपनी अकलें केती कहूं, तुम करावत सब।
बाहेर अंदर अन्तर, या तबहीं या अब।। ३७ ।।

मैं अपनी अक्ल से कहां तक कहूं? सब कुछ तुम करवाते हो। बाहर और अन्दर, तब या अब, सब आप ही करवाने वाले हैं।

जानो तो राजी रखो, जानो तो दलगीर।
या पाक करो हादीपना, या बैठाओ माहें तकसीर।। ३८ ।।

अब आप चाहो तो राजी रखो, चाहो तो उदास रखो या मुझे निर्मल कर अपने समान हादी बना दो या गुनहगार बना दो।

अब मेरा केहेना न कछु, तुमहीं केहेलावत ए।
मेरे कहे मैं रेहेत है, पर सब बस हुकम के।। ३९ ।।

अब मुझे कुछ कहना नहीं है। आप ही कहलवा रहे हो। मेरे कहने से 'मैं' (अहं) आएगा और आपके कहने से हुकम का कहा होगा।

अब सब के मन में ए रहे, इत दिल चाह्या होए।
तो पाइए खेल खुसाली, हक जानत सब सोए।। ४० ।।

अब सबके मन में यह बात आती है कि संसार में हमारी मन चाही इच्छा पूरी होनी चाहिए। तभी इस खेल में आनन्द मिलेगा। यह सब आप जानते ही हैं।

ए भी तुम केहेलावत, कारन उमत के।
अर्स वजूद के अंतर में, तुम पेहेले उपजावत ए।। ४१ ।।

यह भी आप मोमिनों के वास्ते कहलवाते हो। आप हमारे परमधाम के मूल तन में (परआतम में) पहले इच्छा पैदा कर देते हो फिर यहां खेल में मंगवाते हो।

असल हमारी अर्स में, ताए ख्वाब देखावत तुम।
जैसा उत ओ देखत, तैसा करत हैं हम।। ४२ ।।

हमारे मूल तन परमधाम में हैं। उन्हें आप सपने का खेल दिखाते हो। हमारी परआतम वहां से जैसा देखना चाहती है वैसा ही हमारा झूठा तन संसार में करता है।

इन विध गुनाह हम पर, लागत नाहीं कोए।
मैं तो इत नाहीं कितहूं, इत उत किया हक का होए।। ४३ ।।

इस तरह से हमारे ऊपर कोई गुनाह नहीं लगता, क्योंकि हम न यहां हैं और न वहां परमधाम में हैं। यहां संसार में या परमधाम में मेरी आत्मा और परआतम से जो कुछ हो रहा है, वह आपके करने से हो रहा है।

Nijanand App

भुलाए दिया तुम हम को, आप वतन खसम।
ताथें खुदी मैं ले खड़ी, झूठे खेल में आतम।।४४।।

आपने हमको भुलावा दिया जिससे हम अपना घर परमधाम तथा आपको भूल गए। इस संसार में इस तन में 'मैं' (अहं) को लेकर मेरी आत्मा खड़ी हो गई।

आप छिपाया तुम हम सें, झूठे खेल में डार।
फेर कर तुम खड़ी करी, करके गुन्हेगार।।४५।।

आप हमें झूठे खेल में डालकर खुद छिप गए और फिर भूल जाने का दोष लगाकर मुझे गुनहगार बना दिया। आपने ही स्वयं माया में जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर हाथ पकड़ कर खड़ा किया है।

फेर तुम हमको अकल दई, मैं खुदी पकड़ी सोए।
जो जैसी करेगा, तैसी पावेगा सोए।।४६।।

फिर आपने मुझे जागृत बुद्धि दी तो मैंने अपने 'मैं' (अहं) को पकड़ लिया। अब इस झूठी 'मैं' को लेकर जो जैसा करेगा वह वैसा फल पाएगा।

आप भी भेख बदल के, आए अपना दिया इलम।
सब बातें कही वतन की, पर पेहेचान न सकें हम।।४७।।

आप भी भेष बदलकर आए और सतगुरु बनकर मुझे तारतम ज्ञान दिया तथा परमधाम की सब बातें कहीं, परन्तु मैं नहीं पहचान सकी।

इत भी गुनाह सिर पर हुआ, याद न आया असल।
तुम रोए लरखीज कह्या, तो भी रही न मूल अकल।।४८।।

यहां भी गुनाह हमें लगा, क्योंकि हमें अपना मूल घर (परमधाम) और परआतम याद नहीं आई। आपने तो रोकर, लड़कर, खीजकर, गुस्से से भी कहा तो भी हमें मूल घर की जागृत बुद्धि नहीं आई।

यों गुनाह अनेक भांत का, हुआ हमारे सिर।
हम कछू न कर सके, तो भी खबर लई हकें फेर।।४९।।

इस तरह से हमारे सिर अनेक तरह से गुनाह भूल जाने के कारण हुए। जब हम कुछ न कर सके तब आपने मेरे अन्दर आकर मुझे फिर से जागृत किया।

कई सुख हमको अर्स के, भांत भांत दिए अपार।
तो भी नींद हमारी न गई, इत भी हुए गुन्हेगार।।५०।।

हमें परमधाम के तरह-तरह के बेशुमार कई सुख दिए। फिर भी हमारे भ्रम की नींद माया की चाहना न हटने से मैं गुनहगार हो गई।

कर मनसा वाचा करमना, सब अंगों कर हेत।
केहे केहे हारे हमसों, पर मैं न हुई सावचेत।।५१।।

आप मनसा, वाचा और कर्मणा तथा सब अंगों से प्यार कर बहुत कह कहकर थक गए, पर मैं सावधान न हुई।

Nijanand App

यों कई गुनाह केते कहूं, सब ठौरों गई भूल।
कई देखाए गुन अपने, ताको तौल न मोल।।५२ ।।

इस तरह से मैं कितने गुनाह गिनाऊं? मुझसे सब जगह भूल हुई है और आपने कई तरह के एहसान किए जिनकी तौल और मोल नहीं हो सकती।

सो गुन देखे में नजरों, जिनको नहीं सुमार।
तो भी पेहेचान न हुई, न छूटी नींद विकार।।५३ ।।

आपके एहसानों को मैंने अपनी नजर से देखा है जो बेशुमार हैं। फिर भी मुझे आपकी पहचान नहीं हुई और न यह माया का विकार ही छूटा।

पीछे आप जुदे होए के, भेज दिया फुरमान।
सो पढ़्या मैं भली भांत सों, करी सब पेहेचान।।५४ ।।

फिर आप मुझसे अलग हो गए और मेरे पास कुरान भेज दिया। जिसे मैंने अच्छी तरह से पढ़ा और सब तरह की पहचान की।

सो कुंजी दई हाथ मेरे, कोई खोले न मुझ बिन।
सक्त नहीं त्रैलोक को, न कछू सक्त त्रैगुन।।५५ ।।

इस कुरान के छिपे भेदों के रहस्य को खोलने के लिए आपने तारतम की कुंजी मेरे हाथ में दी। जिन छिपे भेदों के रहस्यों को खोलने की ताकत त्रिदेव को नहीं है और न ही चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में किसी और की शक्ति है उनको मेरे बिना कोई नहीं खोल सकता।

इन विध गुन केते कहूं, कई देखे मैं नजर।
मेरे हाथ खुलाए के, करी ब्रह्मांड में फजर।।५६ ।।

इस तरह से मैं आपके एहसान कहां तक कहूं जो मैंने अपनी नजर से देखे। अब कुरान के उन छिपे रहस्यों को मेरे हाथ से खुलवाकर ब्रह्माण्ड में फैले अज्ञान को मिटाकर ज्ञान का सवेरा कर दिया।

कई लिखी इसारतें अर्स की, कई रमूजें अनेक।
पेहेले पढ़ाई मुझ को, मैं ही खोलूं एही एक।।५७ ।।

कुरान में आपने घर (परमधाम) की कई बातों को इशारों में लिख रखा है। आपने पहले मुझे पढ़ाया। अब मैं ही एक ऐसी हूं जो उन छिपे भेदों के रहस्य को खोल दूंगी।

महामत कहे मैं हक की, खोले मगज मुसाफ कलाम।
और हक कलाम कौन खोल सके, जो मिले चौदे तबक तमाम।।५८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि धनी की दी हुई 'मैं' (अहं) ने कुरान के छिपे रहस्य खोल दिए। इन खुदाई वचनों को चौदह लोक भी मिल जाएं तो मेरे सिवाय कोई दूसरा खोल नहीं सकता।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। २०९ ।।

रूहों को कुदरत देखाई हक ने

यों कई देखाई माया, और कई विध करी पेहेचान।
कई विध बदली मजलें, कई पुराए साख निसान।। १ ।।

इस तरह से धनी ने माया के अन्दर कई प्रकार के खेल दिखाए और कई तरह से पहचान कराई और कई तरह से मेरी हालतें बदलीं, अर्थात् पहले मेहराज ठाकुर, फिर इन्द्रावती, फिर महामति और फिर प्राणनाथ बनाया और धर्मशास्त्रों से कई तरह से गवाहियां दिलवाईं।

Nijanand App